

डॉ. डेविड बाउर, आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन, व्याख्यान 30, 1 पतरस 1:3-12

© 2024 डेविड बाउर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 30, 1 पतरस 1:3-12 है।

मैं अब आगे बढ़ना चाहता हूँ और विचार का पता लगाना चाहता हूँ और इस मूलभूत मार्ग की व्याख्या के संबंध में कुछ कहना चाहता हूँ।

यह एक ऐसा अंश है जिसे, हमारे पुस्तक सर्वेक्षण में, हम 1 पतरस की शेष पुस्तक में दिए गए उपदेशों के लिए मूलभूत मानते हैं। निःसंदेह, मैं 1 पतरस 1:3 से 12 तक का उल्लेख कर रहा हूँ। हम इसके सर्वेक्षण से शुरुआत करते हैं, और मेरे निर्णय में, हमारे पास दो मुख्य इकाइयाँ हैं।

पहली मुख्य इकाई वास्तव में केवल आधा छंद लंबी है। हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो। तो, यह हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता, परमेश्वर की धन्यता की घोषणा से शुरू होता है, और फिर 3बी से 12 तक इस कथन का शेष भाग इसका प्रमाण है।

मैं यह क्यों कहता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता को धन्य होना चाहिए क्योंकि, और इसका 1 3 बी से 9 तक ईसाई के अनुभव से लेना-देना है, वास्तव में दो चीजें हैं। सबसे पहले, 1:3बी से 9 में, ईसाई का ईश्वर की दया का अनुभव, ईसाई अनुभव, और फिर 1:10 से 12 में, ईसाई पिछली व्यवस्था के दूतों, पैगम्बरों और स्वर्गदूतों के मुकाबले विशेषाधिकारों और स्थिति को पार कर गया, ईसाई लाभ. तो, 1:3बी से 9 तक, ईसाई अनुभव, 1:10 से 12 तक, ईसाई लाभ।

अब, ईसाई अनुभव के संबंध में, वह स्वयं दो आंदोलनों में टूट गया है। 1:3बी से 5 में आशा और विरासत के लिए पुनर्जन्म के संदर्भ में ईसाई अनुभव, और फिर 1:6 से 9 में कठिन परिस्थितियों के बीच सकारात्मक प्रतिक्रिया की संभावना के संदर्भ में उससे उत्पन्न ईसाई अनुभव। और फिर, 1:10 में 12 के माध्यम से, ईसाई दूतों के मुकाबले विशेषाधिकारों और स्थिति को पार करते हुए, ईसाई लाभ में भी दो गुना आंदोलन शामिल है, 1:10 से 12 ए में भविष्यवक्ताओं पर विशेषाधिकार प्राप्त, और 1 12 बी में स्वर्गदूतों पर विशेषाधिकार प्राप्त। ध्यान दें कि वह यहाँ 1:10 से 12 तक ईसाइयों के वर्तमान परीक्षणों और कष्टों से भविष्य की महिमा, भावी महिमा और मोक्ष के विरुद्ध आगे बढ़ता है, मसीह के परीक्षण और कष्ट बाद की महिमा के विरुद्ध।

तो, 1:3बी से 9 और 1:10 से 12 दोनों में, वह परीक्षणों और पीड़ाओं से भविष्य के गौरव की ओर बढ़ने के बारे में बात करता है। 1:3बी से 9 में, वह ईसाइयों के परीक्षणों और कष्टों से भविष्य के गौरव की ओर बढ़ने के बारे में बात करता है, और 1:10 से 12 में, वह मसीह के कष्टों से बाद के गौरव की ओर बढ़ने के बारे में बात करता है।

इसलिए, संरचनात्मक संबंधों के संदर्भ में, हमारे पास स्पष्ट रूप से एक पुष्टि है, जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, 1:3ए प्रभाव है, हमारे प्रभु यीशु मसीह के भगवान और पिता को धन्यवाद। और फिर 1 3बी से 12 में, वह कारण या वे कारण जिनके लिए भगवान को आशीर्वाद दिया जाता है या उन्हें आशीर्वाद दिया जाना चाहिए। मैंने यहां सवाल उठाने के लिए जगह नहीं ली, लेकिन निश्चित रूप से, मैं ऐसा करूंगा।

हम यह भी ध्यान देते हैं कि हमारे पास एक पुनरावृत्ति है, यहाँ विरोधाभास की पुनरावृत्ति द्वारा एक तुलना है, और वास्तव में यह उस चीज़ से संबंधित है जिसका मैंने अभी उल्लेख किया है, और वह इस मार्ग में है, ईसाइयों की तुलना मसीह से की जाती है जिसमें ईसाई और मसीह दोनों अनुभव करते हैं वर्तमान परीक्षण और कष्ट, लेकिन भविष्य के गौरव और मोक्ष की आशा करें, जिसमें निश्चित रूप से एक विरोधाभास शामिल है, वर्तमान के बीच एक विरोधाभास, हम कह सकते हैं कि परीक्षण और कष्ट, बनाम भविष्य का गौरव और मोक्ष। तो, यह विरोधाभासी अनुभव ईसाइयों के जीवन में साकार हुआ है और ईसा मसीह के जीवन में भी साकार हुआ है। तो, आपके पास नियति, ईसाइयों की इस विपरीत नियति और ईसा मसीह की नियति के बीच यह तुलना है।

अब जैसा कि मैं कहता हूँ, मुझे लगता है कि आपके पास इसके साथ कुछ हद तक पुष्टि हो सकती है क्योंकि ईसाइयों को निश्चित आशा है कि वर्तमान परीक्षण और कष्ट महिमा और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करेंगे, 1:9, क्योंकि मसीह के कष्टों के बाद भी बाद में महिमा प्राप्त हुई थी। दूसरे शब्दों में, ईसाइयों को इसका अनुभव क्यों होगा और वे इसका अनुभव क्यों कर सकते हैं इसका कारण यह है कि ईसा मसीह ने इसका अनुभव किया है। निःसंदेह, हमारे यहां भी कार्य-कारण की पुनरावृत्ति होती है।

परीक्षणों के बीच विश्वास मुक्ति का कारण है, जो प्रभाव है। बार-बार, वह उस बात को यहाँ बताता है, और मोक्ष को यहाँ प्रशंसा, सम्मान और महिमा के साथ-साथ भविष्य की प्रशंसा, सम्मान और महिमा और वर्तमान आनन्द के रूप में समझा जाता है। हालाँकि, हमारे पास ईसाइयों, यहां वर्णित पाठकों और 1, छंद में उनके अनुभव के बीच एक विरोधाभास भी है, जैसा कि इसे पढ़ा जाना चाहिए, छंद 3 से 9 तक, जो मोक्ष का अनुभव करते हैं और भविष्यवक्ताओं और स्वर्गदूतों द्वारा सेवा की जाती है, जिनकी सेवा की जाती है श्लोक 10 से 12 में भविष्यवक्ताओं और स्वर्गदूतों के विरुद्ध, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने इस मुक्ति का अनुभव नहीं किया था, बल्कि उन्होंने इस मुक्ति की भविष्यवाणी की थी और ईसाइयों की सेवा की थी।

तो, ईसाइयों की सेवा पैगम्बरों और स्वर्गदूतों द्वारा की जाती है, और पैगम्बरों और स्वर्गदूतों द्वारा ईसाइयों की सेवा की जाती है। दूसरे शब्दों में, ईसाइयों के बीच एक विरोधाभास है जो मुक्ति का अनुभव करते हैं जिसकी घोषणा केवल पैगंबर और स्वर्गदूत करते हैं। यह पाठ्यक्रम श्लोक 10 से 12 में ईसाई लाभ की पूरी धारणा की ओर इशारा करता है, जिसका हमने उल्लेख किया है, लेकिन वास्तव में यह पूरे खंड से संबंधित है क्योंकि, निस्संदेह, ईसाई अनुभव श्लोक 3 से 9 में

वर्णित है, और फिर पैगंबरों और स्वर्गदूतों के अधीनस्थ और कुछ हद तक कम अनुभव का वर्णन श्लोक 10 से 12 में किया गया है।

तो, आइए आगे बढ़ें और देखें कि विस्तृत विश्लेषण या विचार प्रवाह के संदर्भ में हमारे पास क्या है, लेकिन इसके लिए एक सामान्य व्यापक ढांचे के रूप में हमारे खंड सर्वेक्षण की मुख्य इकाइयों और उप-इकाइयों का उपयोग करना। जैसा कि हमने कहा, वह 1:3ए में धन्यता की घोषणा के साथ शुरू होता है, हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता धन्य हैं। वह एक वर्णन के साथ शुरू करते हैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह के भगवान और पिता को धन्यवाद, और फिर वास्तव में पद 3बी में पाठकों को संबोधित करने के लिए आगे बढ़ते हैं: उनकी महान दया से, हम नए सिरे से पैदा हुए हैं।

एक अर्थ में, वह ईश्वर को संबोधित करते हुए प्रारंभ करता है, हमारे प्रभु यीशु मसीह के ईश्वर और पिता धन्य हैं। अब आशीर्वाद का यह व्यवसाय, जब आशीर्वाद का इस तरह से उपयोग किया जाता है, तो इसका संबंध इस तथ्य की मान्यता में ईश्वर की आराधना से है कि केवल ईश्वर के पास ही सभी अच्छी चीजें हैं और वह सभी अच्छी चीजें देता है। दूसरे शब्दों में, हमें भगवान को आशीर्वाद देना चाहिए क्योंकि भगवान ने हमें आशीर्वाद दिया है।

ईश्वर का हमारा आशीर्वाद ईश्वर के हमारे प्रति आशीर्वाद के जवाब में आता है। चूंकि वह आशीर्वाद देता है, इसलिए हमें उसे आशीर्वाद देना चाहिए। इसमें यह मान्यता और पुष्टि शामिल है कि वह सभी अच्छाइयों का स्रोत है।

वैसे, यदि, वास्तव में, प्रमुख उद्देश्यों में से एक, यदि नहीं तो 1 पीटर का प्रमुख उद्देश्य ईसाई पहचान की संपूर्ण धारणा को संबोधित करना और स्थापित करना है, तथ्य यह है कि वह अपना पत्र इस तरह से शुरू करता है, यह बताता है कि एक उद्देश्य या कार्य ईसाई समुदाय और ईसाइयों के चर्च का उद्देश्य ईश्वर की स्तुति, ईश्वर का आशीर्वाद और दुनिया भर में ईश्वर की प्रशंसा को बढ़ावा देना है। ध्यान दें, उस उद्देश्य कथन को याद रखें जिसका हमने 2:12 में उल्लेख किया है। अन्यजातियों के बीच अच्छा आचरण बनाए रखें ताकि यदि वे आपके खिलाफ गलत काम करने वालों के रूप में बोलें, तो वे आपके अच्छे कामों को देख सकें और दण्ड के दिन परमेश्वर की महिमा कर सकें। परमेश्वर के लोगों का उद्देश्य, और यह परमेश्वर के लोगों की पहचान के केंद्र में है, परमेश्वर की स्तुति करना, परमेश्वर की महिमा करना, और संसार की दुनिया में साधन बनना, अंततः परमेश्वर की महिमा करना है।

कि वे देखें, कि ये अन्यजाति तेरे भले कामोंको देखें, और दण्ड के दिन परमेश्वर की बड़ाई करें। अब जब वह, जब वह बात करता है, लेकिन वह यहाँ विशेष रूप से इस बारे में बात करता है, कि यह परमेश्वर हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर और पिता है। इस वाक्यांश के संबंध में बस दो या तीन बातें।

यह वाक्यांश सुझाव देता है जब वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता के बारे में बात करता है, कि हम परमेश्वर को जान सकते हैं और परमेश्वर को पूरी पर्याप्तता के साथ केवल उस संदर्भ में समझ सकते हैं जो परमेश्वर ने हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता, मसीह में

किया है। यह केवल मसीह के माध्यम से है कि हम ईश्वर को ईश्वर और पिता के रूप में जानते हैं, पीटर सुझाव देते हैं। प्राकृतिक रहस्योद्घाटन नहीं, प्राकृतिक रहस्योद्घाटन के माध्यम से नहीं, यहां तक कि पुराने नियम के रहस्योद्घाटन के माध्यम से भी अपनी शर्तों पर नहीं, नए में इसकी पूर्ति के संदर्भ के बिना।

वास्तव में, 1:10-12 में, पतरस, जब वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता के बारे में बात करता है, पुराने नियम के रहस्योद्घाटन को मसीह के साथ जोड़ता है। जब वह श्लोक 11 में भविष्यवक्ताओं के संबंध में कहते हैं, तो उन्होंने पूछताछ की कि मसीह के कष्टों और उसके बाद की महिमा की भविष्यवाणी करते समय उनके भीतर मसीह की आत्मा द्वारा किस व्यक्ति या समय का संकेत दिया गया था। वास्तव में, ईश्वर के साथ हमारा पुत्रत्व और ईश्वर द्वारा हमारा नया जन्म होना, पिता के साथ यीशु के रिश्ते से निकटता से जुड़ा हुआ है।

हमारा नया जन्म और ईश्वर के प्रति हमारा पुत्रत्व मसीह से उत्पन्न और उसके द्वारा मध्यस्थ है, यदि आप इस अभिव्यक्ति का उपयोग करना चाहते हैं, नया जन्म, उसका पुनरुत्थान। फिर से, हम आगे बढ़ेंगे और पद 3 में कहेंगे कि उनकी महान दया से, हम मृतकों में से यीशु मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से एक जीवित आशा के लिए नए सिरे से पैदा हुए हैं। हम उसके पुनरुत्थान के माध्यम से नए सिरे से पैदा हुए हैं।

अब, इससे यह भी पता चलता है, 3ए बताता है कि केवल वही व्यक्ति जो यीशु को प्रभु के रूप में जानता है, इस आशीर्वाद को बोल सकता है। कोई भी अन्य व्यक्ति वास्तव में इस पूर्ण अर्थ में ईश्वर की आराधना या महिमा करने की स्थिति में नहीं है। केवल यीशु के माध्यम से, और विशेष रूप से उन्हें प्रभु के रूप में समर्पित होकर, हमारे प्रभु यीशु मसीह पर ध्यान देकर, हम इस अर्थ में ईश्वर को पिता के रूप में बुला सकते हैं।

वह इसे बाद में 1:14 में फिर से उठाएगा, आज्ञाकारी बच्चों के रूप में, जो कि आप हमारे भगवान यीशु मसीह के मृतकों में से पुनरुत्थान के माध्यम से भगवान द्वारा आपके नए जन्म के आधार पर हैं, क्योंकि आज्ञाकारी बच्चे जुनून के अनुरूप नहीं होते हैं अपनी पहिली अज्ञानता के कारण, परन्तु जिस ने तुम्हें बुलाया वह पवित्र है, इसलिये अपने सब चालचलन में पवित्र बनो, क्योंकि लिखा है, कि तुम पवित्र होओगे क्योंकि मैं पवित्र हूँ, और यदि तुम पिता कहकर पुकारते हो, जो प्रत्येक का न्याय निष्पक्षता से करता है उसके कर्मों के कारण, यदि तुम उसे पिता कहकर पुकारते हो, तो निर्वासन के पूरे समय भय के साथ आचरण करो। अब, 1:3बी से 5 में, निःसंदेह, 1:3बी से 12 में, वह आगे बढ़ता है और धन्यता की इस घोषणा को प्रमाणित करता है, और इसलिए वह शुरू करता है, जैसा कि हमने कहा, 1 में ईश्वर की दया के ईसाई अनुभव के साथ: 3बी से 9, ईसाई अनुभव, और जैसा कि हमने सर्वेक्षण में पहले ही कहा था, वह यहां 1:3बी से 5 में आशा और विरासत के लिए पुनर्जन्म के साथ शुरू होता है। इसलिए, वह यहां कहता है, हम नए सिरे से पैदा हुए हैं, और यहां शब्द है, एस, एक जीवित आशा और एक विरासत के लिए नए सिरे से जन्म लिया। हम पुनरुत्थान के माध्यम से एक जीवित आशा के लिए पैदा हुए हैं, और यहां जीवित और पुनरुत्थान के बीच संबंध पर ध्यान दें, मृतकों में से यीशु मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से एक जीवित आशा के लिए, और एक विरासत के लिए नए सिरे से पैदा हुए हैं।

अब, निस्संदेह, नए जन्म और विरासत के बीच एक वैचारिक संबंध है। नया जन्म पुत्रत्व को दर्शाता है, और विरासत पुत्रत्व के दायरे से संबंधित है। ईश्वर से जन्म लेने के कारण हम ईश्वर के उत्तराधिकारी हैं।

एक विरासत के लिए, और वह इस विरासत के चरित्र के बारे में अविनाशी, निर्मल और अमर होने की बात करता है, और इस चरित्र का कारण, इस विरासत के इस चरित्र के अविनाशी, निष्कलंक और अमर होने की पुष्टि यह है कि यह स्वर्ग में है। लेकिन वह इसके बारे में भी बात करते हैं, और फिर वह इस विरासत के संरक्षण के बारे में बात करके इसकी पुष्टि भी करते हैं। उनका कहना है कि इसकी रक्षा की गई है, इसकी रक्षा दैवीय और मानवीय दोनों तरीकों से की जा रही है, ईश्वर की शक्ति से, यह दैवीय पहलू है, और हमारे विश्वास के द्वारा, यह मानवीय पहलू है, युगांतकारी मुक्ति के अंत तक प्रकट होने के लिए तैयार है। पिछली बार।

अब, स्पष्ट रूप से, यहां नया जन्म, जो एनाजेनाओ है, ऊपर से पैदा हुआ या फिर से पैदा हुआ, नया जन्म महत्वपूर्ण है। इसका प्रयोग सिर्फ यहीं नहीं बल्कि यहां भी किया जाता है; वह इसे 1:23 में फिर से लाएगा: आपका नया जन्म हुआ है, वह वहां कहता है, नाशवान बीज से नहीं, बल्कि परमेश्वर के जीवित और स्थायी वचन के माध्यम से अविनाशी बीज से। अब, हालाँकि नए जन्म का विचार नए नियम में कहीं और पाया जाता है, विशेष रूप से जोहानाइन लेखन में, यह क्रिया वास्तव में केवल नए नियम में 1 पतरस में, 123 में हमारे अनुच्छेद में पाई जाती है।

यहां, इसमें एक नया अस्तित्व, एक नए प्रकार का अस्तित्व शामिल है, एक ऐसा अस्तित्व जो ईश्वर की वास्तविकता और मसीह में ईश्वर के कार्य, विशेष रूप से ईसा मसीह के पुनरुत्थान से आकार लेता है, वास्तविकता के उस दृष्टिकोण के विपरीत जो वर्तमान जीवन और सांसारिक चीजों को अंततः देखता है महत्वपूर्ण, एक ऐसा अस्तित्व जो इस दुनिया की वास्तविकताओं से आकार लेता है। यह उसके विरुद्ध खड़ा है। और यह, निस्संदेह, इस पूरे व्यवसाय की ओर ले जाता है, जैसा कि हमने पहले देखा, यहां अजनबियों और निर्वासित भाषा का।

अब, इस नये जन्म के पुनर्जीवन का स्रोत उनकी महान दया है। वास्तव में, इसमें दयालु सहायता की धारणा शामिल है। यह पुराने नियम की हेड की धारणा के बारे में बात करने का नया नियम है, उसकी दयालु सहायता, जरूरतमंदों के प्रति सक्रिय, दयालु सहायता।

यह सब दया की इस धारणा में बंधा हुआ है। अब, हम जोर देने के संदर्भ में दो या तीन चीजों पर ध्यान देकर इसका विस्तार कर सकते हैं। हम ध्यान दें कि वह यहां इस बात पर जोर देते हैं कि नया जन्म पूरी तरह से ईश्वर का कार्य है।

यह मौलिक रूप से ईश्वरकेंद्रित है। यह पूरी तरह से ईश्वर का कार्य है। भगवान की महान दया से, हमारा नया जन्म हुआ है।

वैसे, वहाँ फिर से, आपके पास वह दिव्य निष्क्रियता है जिसके बारे में हमने जेम्स में बात की थी। हमें भगवान ने नये सिरे से जन्म दिया है। इसमें कोई मानवीय शक्ति या योग्यता शामिल नहीं है।

और निःसंदेह, इसका ईसाई जीवन पर सभी प्रकार का प्रभाव पड़ता है। ईसाई जीवन की विशेषता ईश्वर ने जो किया है उसके लिए कृतज्ञता, ईश्वर ने जो किया है उस पर विश्वास और ईश्वर ने जो किया है उस पर विश्वास, इस विश्वास से कि ईश्वर हमारी सभी जरूरतों को, विशेष रूप से हमारी, उसी महान दयालु शक्ति से पूरा करते रहेंगे। आध्यात्मिक आवश्यकताएँ, आश्चर्य से, प्रशंसा से। फिर से, हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता को, नम्रता से, अपेक्षा से धन्य कहा जाए।

आप देखिए, यह सब इस व्यवसाय द्वारा सुझाया गया है कि हमारा नया जन्म ईश्वर की दयालु मदद से है। इसका तात्पर्य, दूसरे, विनाशकारी शक्तियों से सहायता या मुक्ति है। उनकी महान दया से, हमारा नया जन्म हुआ है।

ये विनाशकारी शक्तियां शक्तिशाली हैं, इसलिए उनकी महान दया से, महान दया है। बड़ी दया की अपेक्षा है। अब, शायद, जब हम इन ताकतों, इन विनाशकारी ताकतों के बारे में बात करते हैं जिनसे हमें छुटकारा मिला है, शायद, निश्चित रूप से, ये ताकतें मृत्यु से संबंधित हैं और वह सब कुछ जो मृत्यु में शामिल है, जैसे निराशा, निराशा, व्यर्थता।

ये सभी चीजें वह विकसित करेगा, पीटर संदर्भ में विकसित करेगा। तीसरी बात जिस पर यहां जोर दिया गया है वह यह है कि दयालु नए जन्म के माध्यम से ईसाई ईश्वर के लोग बन जाते हैं और ईश्वर के लोगों में शामिल हो जाते हैं। निस्संदेह, वह 2:10 और 7 में इसे फिर से सामने लाएगा। एक समय, आप लोग नहीं थे, लेकिन अब आप परमेश्वर के लोग हैं।

एक बार जब आपको दया नहीं मिली, तो वही शब्द आपके यहां है, उनकी महान दया से, हमने नए सिरे से जन्म लिया है। पहिले तो तुम पर दया न हुई थी, परन्तु अब तुम पर दया हुई है। प्रिय, मैं आपसे विदेशी और निर्वासित के रूप में विनती करता हूँ कि आप शरीर के उन जुनून से दूर रहें जो आपकी आत्माओं के खिलाफ युद्ध करते हैं।

दूसरे शब्दों में, दया प्राप्त करने से लोकजीवन संभव है। दया प्राप्त करना वह बंधन है जो चर्च को एकजुट करता है और इसे दुनिया में ईश्वर के लोगों के रूप में कार्य करने की अनुमति देता है। अंततः हम यही साझा करते हैं।

हम इस प्रकार की दया के पात्र हैं। हम, एक साथ, इस तरह की दया साझा करते हैं और यह हमें एक साथ बांधती है और वास्तव में हमें अलग भी करती है। हमें मसीह के शरीर के भीतर एक साथ बांधता है और हमें दुनिया के अन्य लोगों से अलग करता है।

एक समय तुम लोग नहीं थे, परन्तु अब तुम परमेश्वर के लोग हो। पहिले तो तुम पर दया न हुई थी, परन्तु अब तुम पर दया हुई है। और, निःसंदेह, यह दया दुनिया में परमेश्वर के लोगों के चरित्र को निर्धारित करती है।

एक दूसरे के प्रति दयालु और जो बाहर हैं उनके प्रति दयालु। अब, इसका लक्ष्य, नये सिरे से जन्म लेना, दोहरा है। ए पर ध्यान दें।

नये सिरे से जन्मे, दो. सबसे पहले, एक जीवित आशा। अब, आशा इस पुस्तक में एक प्रमुख शब्द है।

मसीह के पारौसिया में आएगा। इसका तात्पर्य विश्वास से है। इस आशा का तात्पर्य विश्वास से है।

इस आशा में विश्वास, सूचित आशावाद और धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा शामिल है। इसमें चिंता और चिंता से मुक्ति, अंत के प्रकाश में जीना और अंत की अंतिम वास्तविकता के प्रकाश में अब हर चीज को देखना शामिल है। इसमें चिंता से मुक्ति और चिंता और दृढ़ विश्वास शामिल है कि भगवान ही मुक्ति और सुरक्षा का एकमात्र स्रोत है।

यह भविष्य-उन्मुख है लेकिन इसने वर्तमान अस्तित्व के लिए पाए गए निहितार्थों को पूरा किया है। वास्तव में, यह ईश्वर के भविष्य के कार्य की निश्चित प्रत्याशा में जीया गया वर्तमान जीवन है। और इसलिए, यह भविष्य के उद्धार को हमारे वर्तमान अस्तित्व को सूचित करने और आकार देने और इस प्रकार अब एक प्रकार के मोक्ष का अनुभव करने की अनुमति देने का एक तरीका है।

अब मैं यहां केवल इसका उल्लेख करना चाहता हूं, और हमारे पास इसे विकसित करने का समय नहीं होगा, कि आशा 1 पतरस में ईसाई अस्तित्व की मूल विशेषता है, जैसे पॉल के लिए विश्वास है। तो, उपदेश 1:13 में पीटर द्वारा अपने पाठकों से पूरी तरह से आग्रह करने के साथ शुरू होता है कि वे अपनी सोच को उस आशा के अनुरूप आकार दें जो पारूसिया की ओर निर्देशित है। 1:21 में, आशा ईश्वर के प्रति ईसाई का एक मौलिक दृष्टिकोण है।

जैसा कि वह यहां कहते हैं, ताकि आपका विश्वास और आशा ईश्वर में रहे। 3:5 और 6 में, आशा एक ऐसे जीवन की विशेषता बताती है जो ईश्वर को स्वीकार्य है। 3:6, जैसे सारा ने इब्राहीम की आज्ञा मानकर उसे प्रभु कहा, ठीक है मुझे इसे इस तरह से कहना चाहिए, वास्तव में 3:5, इसलिए एक समय पवित्र स्त्रियाँ जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, सजती-संवरती थीं और अपने पतियों के प्रति समर्पित थीं, जैसा कि वह वहाँ कहता है।

और 3:15 में, ईसाई जीवन की विशेषता इस आशा से है कि ईश्वर आपके भीतर है। जैसा कि वह वहाँ कहते हैं, जो भी आपसे आपके भीतर की आशा का हिसाब मांगता है, उसका बचाव करने के लिए हमेशा तैयार रहें। वास्तव में इसमें पीटर के धर्मशास्त्र के संबंध में दो बातें शामिल हैं, जो वास्तव में पीटर और पॉल के बीच जोर देने के कुछ अंतर को दर्शाती हैं।

पीटर में, मुक्ति केवल मुक्ति नहीं है; मोक्ष मूलतः भविष्य है। यदि पॉल में अधिकांश भाग के लिए, पॉल में, मुक्ति का बिंदु क्रूस पर है। जैसा कि वे कहते हैं, हम मसीह के कार्य के कारण बचाए गए थे और विशेष रूप से, क्रूस पर उनकी मृत्यु पर ध्यान केंद्रित करने के कारण।

वह पॉल में मुक्ति का ठिकाना है। लेकिन 1 पतरस में, मुक्ति का ठिकाना उसके दूसरे आगमन में है। तो, 1 पतरस में, मोक्ष अनिवार्य रूप से भविष्य है।

वास्तव में, जिस मुक्ति का हम अभी अनुभव कर रहे हैं, और पीटर के पास वर्तमान मुक्ति की धारणा है, ईसाइयों को अब जो मुक्ति का अनुभव है वह एक प्रकार की प्रत्याशा है और एक

प्रकार का पूर्वाभास है, एक प्रकार का पूर्वाभास है, एक प्रकार है मोक्ष की प्रतिकृति का जिसे हम अनुभव करेंगे। हम उस मोक्ष की प्रत्याशा और आशा के माध्यम से अनुभव करना शुरू कर रहे हैं जिसका अनुभव हम अंत में करेंगे। अब मैंने कहा कि यह पॉल से कुछ अलग है।

वास्तव में, यह बिल्कुल 1 थिस्सलुनिकियों में उद्धार के बारे में पॉल की समझ है, जो यकीनन पॉल का पहला पत्र है। 1 थिस्सलुनिकियों के पास वास्तव में बहुत अधिक धर्मशास्त्र नहीं है कूसिस , एक तकनीकी धर्मशास्त्रीय शब्द का उपयोग करने के लिए, जिसका अर्थ है, क्रॉस का धर्मशास्त्र। क्रॉस का धर्मशास्त्र प्रमुख नहीं है, और यह 1 थिस्सलुनिकियों में प्राथमिक नहीं है। 1 थिस्सलुनिकियों में, पॉल मुक्ति को भविष्य से जोड़ता है। हम बच जायेंगे. और अब हमारे पास जो मुक्ति का अनुभव है, वह उसी की प्रत्याशा है।

और 1 थिस्सलुनिकियों में भी, 1 पतरस की तरह, हम मुख्य रूप से आशा से और केवल गौण रूप से विश्वास द्वारा बचाए जाते हैं। इसलिए जबकि अधिकांश पॉल में विश्वास क्रियाशील है, मुक्ति में क्रियाशील तत्व के रूप में इस पर जोर दिया गया है, 1 पतरस में, विश्वास महत्वपूर्ण है, लेकिन मुक्ति को संभव बनाने के संदर्भ में जो चीज विश्वास से भी अधिक महत्वपूर्ण है वह आशा है। और यह 1 थिस्सलुनिकियों के बारे में भी सच है, जहां पॉल विश्वास की भूमिका से अधिक मुक्ति में आशा की भूमिका पर जोर देता है, यहां तक कि 1 पतरस विश्वास की आशा से अधिक मुक्ति में आशा की भूमिका पर जोर देता है।

बेशक, आपके पास वास्तव में दोनों होने चाहिए। तो, यह या तो का मामला नहीं है, बल्कि यह सापेक्ष जोर देने का मामला है। अब, यह आशा 1 थिस्सलुनिकियों 3 में जीवित आशा के रूप में योग्य है।

वह जीवित शब्द का प्रयोग दो बार और करने जा रहा है। वह इस शब्द के जीवित शब्द होने के बारे में बात करने जा रहा है। हम बचाए गए हैं, हमारा नया जन्म हुआ है, और वास्तव में, वे भी नए जन्म के संदर्भ में हैं, जीवित शब्द से, भगवान के जीवित शब्द से, भगवान के जीवित शब्द से।

इसके अलावा, वह 2:4 में मसीह के बारे में एक जीवित पत्थर के रूप में बात करेगा। दोनों ही मामलों में, जीवित रहने की धारणा धीरज की ओर इशारा करती है, मृत्यु के खतरे के प्रति भी संवेदनशील नहीं, और जीवन शक्ति, और निर्भरता और निश्चितता की ओर। जीवन के उस अर्थ में जीना जो ईश्वर से आता है और ईश्वर से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है ताकि जीवन तब तक मौजूद रहे जब तक ईश्वर मौजूद है।

यह अधिक मजबूत है. 1 पतरस के अनुसार, जीवन सभी चीजों से अधिक मजबूत है, जिसमें मृत्यु भी शामिल है। इसके अलावा, यह महत्वपूर्ण है; कहने का तात्पर्य यह है कि, यह सक्रिय है, और इसमें संपूर्ण जीवन को आकार देने की शक्ति है। महान स्विस न्यू टेस्टामेंट विद्वान बो रीचे ने इसे इस तरह से कहा: एक आशा जिसके द्वारा कोई जी सकता है।

यह आशा निश्चित और जीवित है क्योंकि यह यीशु के पुनरुत्थान पर आधारित है, जो इतिहास की एक अतीत की घटना है जो ऐतिहासिक भी है और एक ऐसी घटना जो वास्तव में इतिहास के

धरातल पर घटित हुई है। यह अतीत का हिस्सा है, यह एक अतीत की घटना है, और युगांतशास्त्रीय भी है, यह इतिहास के अंत से संबंधित है। यह समय की युगांतकारी घटना है।

युगों का अंत आ गया है। मृतकों में से यीशु के इस पुनरुत्थान में, ईश्वर ने सभी परिस्थितियों में सबसे निराशाजनक, मृत्यु, में आशा की जीत का प्रदर्शन किया। मुद्दा यह है कि आशा किसी भी तरह से परिस्थितियों से कमजोर या कम नहीं होती है।

और यहां पाठक की परिस्थितियों से संबंध पर ध्यान दें, जो बहुत गंभीर हैं, बहुत कठिन हैं। परमेश्वर के अंतिम समय के उद्धार के रास्ते में कोई भी चीज़ न तो खड़ी हो सकती है और न ही खड़ी होगी। अब, हम इस सब के संबंध में और भी बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन हम यहां दूसरे तत्व पर ध्यान देने के लिए आगे बढ़ते हैं, वास्तव में, हम इसे नए सिरे से जन्म लेने का दूसरा प्रभाव कह सकते हैं, जो न केवल एक जीवित आशा के लिए है बल्कि एक विरासत के माध्यम से।

अब, जीवित आशा वास्तव में, एक जीवित आशा के लिए, वास्तव में एक अर्थ में अधिक व्यक्तिपरक है, यानी आशा के जीवन के लिए, जबकि यह विरासत अधिक उद्देश्यपूर्ण है, जिसका सार आशा है। इसमें वास्तव में परमेश्वर के वादे को प्राप्त करना या अनुभव करना शामिल है, विशेष रूप से शाश्वत मोक्ष और महिमा का वादा। अब, वह यहां विरासत का उपयोग करता है, और यह वास्तव में पुराने नियम की भाषा का संकेत है, जहां विरासत का उपयोग विशेष रूप से कनान की भूमि, कनान की भूमि के लिए किया जाता है।

निःसंदेह, परमेश्वर ने कुलपतियों से भूमि को विरासत के रूप में देने का वादा किया था, और वह विरासत का उपयोग इस्राएल के लोगों से बात करने के संदर्भ में भी करता है। जमीन उनकी विरासत है। तो, स्पष्ट रूप से, वह भूमि की पुराने नियम की धारणा की ओर इशारा कर रहा है।

लेकिन इस विरासत को कनान की भूमि से अलग बताया गया है, और यह अंतर तीन नकारात्मकताओं से संकेत मिलता है, एक विरासत जो अविनाशी, अपवित्र और अमर है, वह कहते हैं। अविनाशी, एफ्थार्टोस, जो ईश्वर की विशेषता है, वह संपत्ति जो स्वयं ईश्वर की विशेषता बताती है, अविनाशी, पूरी तरह से मुक्त, दूसरे शब्दों में, किसी भी परिवर्तन से, किसी भी क्षय से, किसी भी भ्रष्टाचार से, आपदा से मुक्त, निर्मल, अमियान्टोस, नैतिक अशुद्धता से मुक्त, उस प्रकार की क्षति से मुक्त जो बुराई आवश्यक रूप से दुनिया में चीजों को लाती है, न केवल तबाही से मुक्त, बल्कि उस क्षति, अपवित्रता, बुराई से होने वाली क्षति से भी मुक्त, अमिट, अमृत, वह जो अपनी चमक या आकर्षण नहीं खोएगा, उन सांसारिक वस्तुओं के विरुद्ध जो इस प्रकार की हैं कि हम उनसे थक जाते हैं। संयोग से, यह दिलचस्प है कि यह पिताओं के साथ एक मुद्दा था।

यह कुछ पिताओं के लिए एक बड़ी समस्या थी जब उन्होंने शाश्वत महिमा, अनंत काल, निश्चित रूप से, उनके द्वारा समझे जाने पर विचार किया, जैसा कि मुझे लगता है कि नए नियम में, अंतहीन समय के रूप में है। प्रश्न यह है कि हम उससे संतुष्ट कैसे होंगे? क्या हम बोर नहीं हो जायेंगे? सारा मामला स्वर्ग की बोरियत का है। और पीटर वास्तव में इसे संबोधित कर रहा है।

यह अपनी चमक नहीं खोएगा या सांसारिक चीजों के प्रति आकर्षण नहीं खोएगा, जिनका चरित्र ऐसा है कि हम उनसे थक जाते हैं, समय के प्रभाव से मुक्त हो जाते हैं। अब, यह दिलचस्प है। तो, हमारे पास वास्तव में एक पूरी तरह से नया आदेश है, इस प्रकार नए जन्म से संबंधित है।

यह सच्ची वास्तविकता है, क्योंकि यह वास्तविकता है जो उनके चारों ओर क्षणभंगुर और लौकिक से परे है। अब, मुझे लगता है कि यह धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण है कि वह ऐसा करना चुनता है, और यह कुछ ऐसा है जो आपने नए नियम में अक्सर देखा है, कि वह भविष्य की स्वर्गीय महिमा का नकारात्मक रूप से वर्णन करना चुनता है, यानी, जो यह नहीं है उसके द्वारा। यह वास्तव में स्वर्गीय महिमा के अतिक्रमण का तात्पर्य है।

कहने का तात्पर्य यह है कि वास्तव में इसके बारे में बात करने का एकमात्र तरीका यह नहीं है कि यह क्या है क्योंकि यह जो है वह हमारे अनुभव से इतना अलग है कि इसका वास्तव में सकारात्मक वर्णन नहीं किया जा सकता है। इसका वर्णन करने का एकमात्र तरीका यह है कि यह क्या नहीं है, यह जो हम वर्तमान में अनुभव कर रहे हैं उससे कैसे भिन्न है। अब, वह इस बात पर जोर देने के लिए आगे बढ़ता है कि यह, जैसा कि वह कहता है, आपके लिए स्वर्ग में रखा गया है।

यह एक परमात्मा है, जिसे भगवान ने रखा है। आपके पास यहां एक बार फिर ईश्वरीय निष्क्रियता है, जिसे ईश्वर ने आपके लिए स्वर्ग में रखा है, निस्संदेह, स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जहां ईश्वर शासन करता है और अपना एकमात्र नियंत्रण रखता है। अब, वह यहाँ ग्रीक में पूर्ण काल का उपयोग करता है।

पूर्ण काल यह दर्शाता है कि इसे जमा पर रखा जा रहा है। यानी यह पहले से ही मौजूद है। हमारा इनाम पहले से ही मौजूद है।

यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो अभी तक अस्तित्व में नहीं आई है। निःसंदेह, यह बिंदु इसकी निश्चितता पर बल देता है। यह पहले से ही वहां है।

यह हमारा इंतजार कर रहा है। यह पहले से ही अस्तित्व में है और स्वयं ईश्वर द्वारा इसे जमा करके रखा जा रहा है। न केवल विरासत को संरक्षित किया जाता है, बल्कि पाठकों को भी संरक्षित किया जाता है ताकि वे इस विरासत को प्राप्त करने के लिए आश्वस्त हों।

वे सर्वत्र संरक्षित हैं। उनकी रक्षा की जाती है। अब, फिर से, आपके पास दिव्य निष्क्रियता का संकेत देने वाली निष्क्रिय आवाज़ है, जो ईश्वर द्वारा संरक्षित है।

वैसे, इस संरक्षित शब्द का सैन्य संबंध भी है। इसे ऐसे समझा जा सकता है, जैसा कि किसी ने कहा है, सुरक्षात्मक अभिरक्षा। परमेश्वर वह है जो रक्षा करता है।

अब, यहां आपके पास वर्तमान काल है, लगातार खड़ा पहरा, लगातार खड़ा पहरा। अब, इस सुरक्षा में वास्तव में दो साधन शामिल हैं। इसमें परमात्मा और मानव दोनों शामिल हैं।

दैवीय पक्ष पर, हमें ईश्वर की शक्ति द्वारा संरक्षित किया जा रहा है। निःसंदेह, ईश्वर की शक्ति का वर्णन उसकी शक्ति के संदर्भ में यीशु को मृतकों में से जीवित करने के उसके कार्य द्वारा किया गया है। मृतकों के पुनरुत्थान का यह व्यवसाय एक बहुत शक्तिशाली घटना है।

और यह, फिर से, आश्वासन देता है कि वही शक्ति जिसमें मृतकों में से पुनरुत्थान शामिल था, परमेश्वर हमारी रक्षा करने में सक्रिय है। परिस्थितियाँ कितनी भी विपरीत क्यों न हों, किसी को निराश होने की जरूरत नहीं है। यहां तक कि हममें से जो मेरी राय के विपरीत हैं, मेथोडिस्ट और वेस्लीयन परंपराओं में, जो मानते हैं कि नया नियम समग्र रूप से सुझाव देता है या सिखाता है कि किसी के लिए गिरना संभव है, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि यह आसान नहीं है किसी को विश्वास द्वारा संरक्षित किया जा रहा है।

और, निःसंदेह, सुधारवादी परंपरा के लोग कहेंगे कि यह असंभव है। यह आप पर छोड़ दें कि आप उसमें कहां उतरते हैं। लेकिन यहां निश्चित रूप से आपके पास एक प्रकार का तालमेल है।

यह केवल ईश्वर की शक्ति का मामला नहीं है। यह उसमें मानवीय भागीदारी का भी मामला है, विश्वास के माध्यम से ईश्वर की शक्ति को क्रियाशील बनाना। जो, भगवान की शक्ति से, अंतिम समय में प्रकट होने के लिए तैयार मोक्ष के लिए विश्वास के माध्यम से संरक्षित हैं।

पुनः, जैसा कि हमने कहा, मोक्ष मुख्यतः भविष्य है। मोक्ष आखिरी बार प्रकट होने के लिए तैयार है। यह दिव्य सुरक्षात्मक शक्ति क्रियाशील दीया है पिस्टिस, विश्वास के माध्यम से।

ईश्वर की शक्ति में विश्वास ईश्वर की शक्ति को क्रियाशील बनाता है। अब पीटर में, विश्वास का उपयोग ईसाई जीवन में प्रवेश करने के अर्थ में उतना नहीं किया जाता जितना कि ईसाई जीवन और अस्तित्व को संरक्षित करने के लिए किया जाता है। यह, फिर से, कम से कम पॉल के अधिकांश पत्रों से थोड़ा सा अंतर है।

लेकिन प्रकार का अंतर नहीं, बल का अंतर है। अब, वह यहां कहते हैं, हालांकि, विश्वास के माध्यम से भगवान की शक्ति द्वारा संरक्षित होने के इस व्यवसाय का उद्देश्य अंतिम समय में प्रकट होने के लिए तैयार मोक्ष है। और हम यहां पहले ही मुक्ति पर भविष्य के जोर के बारे में बात कर चुके हैं।

और इसलिए, हम श्लोक 6 से 9 तक आगे बढ़ेंगे, जहां हमारा दूसरा आंदोलन है, यहां श्लोक 3 से 9 के भीतर। सकारात्मक प्रतिक्रिया, जो वास्तव में नए सिरे से जन्म लेने का प्रभाव है, सकारात्मक होने की संभावना है कठिन परिस्थितियों के बीच प्रतिक्रिया। अध्याय 1, श्लोक 6 से 9 तक। अब, इस परिच्छेद में आनन्द मनाने पर जोर दिया गया है। यह वास्तव में आनंद से शुरू और समाप्त होता है।

श्लोक 6, इसमें तुम आनन्दित हो। और फिर, निःसंदेह, वह यहाँ श्लोक 8 में संकेत देगा, उसे देखे बिना, आप उससे प्यार करते हैं, हालाँकि अब आप उसे नहीं देखते हैं, आप उस पर विश्वास करते हैं, और अवर्णनीय और अत्यधिक खुशी के साथ आनन्दित होते हैं। इसलिए, इस सामग्री को एक साथ बांधने वाला व्यापक विषय कठिन परिस्थितियों के बीच आनंद मनाना है।

अब, वह यहां छंद 6 और 7 में प्रतिकूल वास्तविकताओं के बीच आनंद मनाने की चर्चा से शुरुआत करते हैं। प्रतिकूल वास्तविकताओं और परीक्षणों के बीच आनन्दित होना। 1:6 और 7, इसमें आप आनन्दित होते हैं, यद्यपि अब थोड़ी देर के लिए, यह, निःसंदेह, एक हल्का विरोधाभास है, एक प्रकार की रियायत है, इसमें आप इस तथ्य के बावजूद आनन्दित होते हैं कि अब थोड़ी देर के लिए आप आनन्दित हो सकते हैं विभिन्न परीक्षणों को सहना होगा, ताकि, यहां आपके पास एक उद्देश्य कथन हो, ताकि आपके विश्वास की वास्तविकता, सोने से भी अधिक कीमती, जो आग से परीक्षित होने पर भी नाशवान है, के प्रकट होने पर प्रशंसा और महिमा और सम्मान में बदल जाए। यीशु मसीह।

अब, जब वह यहाँ परीक्षणों के बीच आनन्दित होने की बात करता है, जैसा कि मैं कहता हूँ कि आनन्द श्लोक 6 और 7 में विषय को स्थापित करता है, यह एक जीवित आशा और एक विरासत के लिए फिर से जन्म लेने का परिणाम है, जैसा कि वह यहाँ कहता है, अविनाशी है, निष्कलंक और अमर, कार्रवाई के प्रत्यक्ष निहितार्थ के साथ, आपके लिए स्वर्ग में रखा गया है। यह आनन्द मसीह के प्रकटीकरण पर चरमोत्कर्ष होगा, जो कि है, लेकिन यह आनन्द जो मसीह के रहस्योद्घाटन पर चरमोत्कर्ष है, अभी भी अनुभव किया जाता है, जैसा कि वह 4:13 में कहेंगे, लेकिन जहाँ तक आप मसीह के कष्टों को साझा करते हैं, आनन्दित हों, ताकि आप भी ऐसा कर सकें जब उसकी महिमा प्रगट हो तो आनन्दित और प्रसन्न हो। अब, वह कहते हैं, निस्संदेह, वह यहां परीक्षणों के बीच इस आनंद के संदर्भ पर जोर देते हैं, जिसे वह यहां पुस्तक में केवल एक संभावना के रूप में नहीं बल्कि एक वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

वास्तव में, जैसा कि आप पूरी किताब में पढ़ते हैं, यह दिलचस्प है, पीड़ा की धारणा, यह इस बात का एक अच्छा उदाहरण है कि पुनरावृत्ति वास्तव में किसी पुस्तक के भीतर विकास को कैसे चिह्नित कर सकती है। जैसे-जैसे आप पुस्तक पढ़ते हैं, आप देखेंगे कि इन पुनर्पाठकों की पीड़ा की निश्चितता बढ़ती जा रही है। वह यह संकेत देकर शुरू करता है कि आप पीड़ित हो सकते हैं, और फिर वह आगे बढ़ता है और तेजी से वह इस तथ्य के बारे में बात करता है कि वे पीड़ित हैं।

लेकिन परीक्षणों के बीच में आनंद मनाने के इस व्यवसाय में यहां तीन जोर हैं। पहला यह है, और इसका संबंध परीक्षणों के संबंध में तीन जोरों से है। एक तो यह कि परीक्षण परिवीक्षाधीन या प्रारंभिक होते हैं।

परमेश्वर ने आदेश दिया है कि महिमा परीक्षणों के अंत में और उनके परिणामस्वरूप आनी चाहिए। निःसंदेह, यह बिल्कुल मसीह का अनुभव है। वह अपने कष्टों के बाद और उनके कारण अपनी महिमा में प्रवेश करता है।

यह परिवीक्षाधीन है। हमने जेम्स के संबंध में उल्लेख किया है कि, कम से कम बाइबिल के अधिकांश भाग में, आपको ईश्वर की ओर से मध्य ज्ञान की किसी भी प्रकार की समझ नहीं है। और हम उसी प्रकार को पाते हैं, बल्कि यह कि ईश्वर वास्तव में जान सकता है कि हम कौन हैं, क्या हम शाश्वत महिमा के लिए उपयुक्त हैं, केवल तभी जब वह देखता है कि हम परीक्षणों या परीक्षणों के संदर्भ में चीजों पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं जो वह हमें भेजता है।

और इसलिए, वही चीज़ यहां पाई जाती है ताकि आपके विश्वास की वास्तविकता प्रशंसा और महिमा आदि में बदल जाए।

यह संबंधपरक भी है. इसमें मसीह के कष्टों को साझा करने, उनके कष्टों में उनके साथ एक होने और महिमा में उनके साथ एक होने का विशेषाधिकार शामिल है। यह युगांतशास्त्रीय भी है।

इन वर्तमान कष्टों में यह तीसरा जोर है। यह वास्तव में संभवतः यहूदी धर्म और नए नियम में मसीहाई संकटों से संबंधित है। कहने का तात्पर्य यह है कि, तथ्य यह है कि ईसाई परीक्षण सहन कर रहे हैं, और संयोग से, जेम्स के विपरीत, यहां परीक्षण विशेष रूप से ईसाई उत्पीड़न से संबंधित है, परीक्षण से नहीं।

जेम्स विभिन्न प्रकार के परीक्षणों के बारे में बात करते हैं। और वह विकसित करता है, आप जानते हैं, ईसाईयों के विभिन्न प्रकार के परीक्षण, जिन्हें उसके पाठक अनुभव कर सकते हैं। उनमें से कई जिनका वर्णन जेम्स ने आगे किया है, सामान्य रूप से मानव जीवन से संबंधित हैं और ईसाई अस्तित्व के लिए अद्वितीय नहीं हैं; उनका विशेष रूप से ईसाई उत्पीड़न से कोई लेना-देना नहीं है।

लेकिन पतरस मसीह के लिए पीड़ा के अर्थ में परीक्षणों का उपयोग करता है। तो, इसमें वास्तव में मसीह के लिए कष्ट उठाना शामिल है, और वह सुझाव देने जा रहा है, पीटर बाद में पुस्तक में कहेंगे, कि यह वास्तव में एक उत्साहजनक बात है क्योंकि जहाँ तक आप मसीह के लिए कष्ट सहते हैं, आप पहचानते हैं कि आप वास्तव में मसीहाई संकटों में भाग ले रहे हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि, आप वास्तव में परमेश्वर के लोगों का हिस्सा हैं जिनका अंत आने पर उद्धार किया जाएगा।

यहूदी धर्म में, एक महत्वपूर्ण, काफी व्यापक मान्यता थी कि मसीहा के आने से ठीक पहले, एक बड़ा पतन होगा, और जो लोग ईश्वर के प्रति वफादार हैं उनके लिए महान क्लेश और पीड़ा का समय होगा। और इसे नए नियम में प्रारंभिक ईसाई धर्म द्वारा उठाया और अपनाया गया है। और इसलिए, गॉस्पेल में ओलिवेट प्रवचन, मार्क 13 और समानताएं जैसे अंशों में, यीशु सुझाव देते हैं कि वास्तव में पूरी अवधि की विशेषता होगी, उनके पुनरुत्थान और उनके दूसरे आगमन के बीच की पूरी अवधि इन मसीहाई संकटों की विशेषता होगी।

लेकिन विशेष रूप से ईसा मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले की अवधि में, इन मसीहाई संकटों और इसी तरह की अन्य घटनाओं में तीव्रता आएगी। पतरस 4:17 में उसी विचार को उठाता है जब वह कहता है, क्योंकि न्याय का समय आ गया है कि परमेश्वर के घराने से शुरुआत की जाए। और यदि इसकी शुरुआत हम से होती है, तो जो लोग परमेश्वर के सुसमाचार का पालन नहीं करते उनका अंत क्या होगा? तो, अजीब तरह से पर्याप्त, विडंबनापूर्ण रूप से पर्याप्त, मसीह के लिए कष्ट उठाना वास्तव में अच्छी खबर है, वह सुझाव देते हैं।

अब, यह कष्ट थोड़ी देर के लिए है, उस अनन्त महिमा की तुलना में जो वे परिणामस्वरूप अनुभव करेंगे। वैसे, वह यहां इंगित करता है कि विश्वास की बहुमूल्यता के कारण ही विश्वास का परीक्षण आवश्यक है। फिर, यह ईसाई उत्पीड़न का उजला पक्ष है।

कहने का तात्पर्य यह है कि इस प्रकार के परीक्षणों में परमेश्वर का एक उद्देश्य है, और वह है विश्वास को परिष्कृत करना और उसका परीक्षण करना, दोनों ही केवल विश्वास को परिष्कृत करके। वास्तव में, उसके मन में आस्था से भिन्न हर चीज के विश्वास को हटाना है, जैसे कि अच्छी धातु को परिष्कृत करने में उसमें से मिश्र धातु को निकालना, उसे शुद्ध करना शामिल है। लेकिन यह इसका परीक्षण भी करता है ताकि यदि यह सच्चा विश्वास नहीं है, तो यह परीक्षणों और इस तरह की चीजों से बच नहीं पाएगा। लेकिन भगवान उस प्रक्रिया से गुजरते हैं, और विश्वास के मूल्य के कारण भगवान उस प्रक्रिया का इरादा रखते हैं।

जिस तरह लोग उन धातुओं को परिष्कृत करने की परवाह नहीं करते जो मूलतः बेकार हैं, बल्कि केवल चांदी और सोने जैसी अच्छी धातुओं को परिष्कृत करते हैं, वैसे ही भगवान विश्वास को परिष्कृत करते हैं क्योंकि विश्वास अनमोल है। अब, हालांकि, श्लोक 8 और 9 में, वह एक अन्य संदर्भ में आनन्द मनाने की बात करता है, और वह है अदृश्य वास्तविकताओं के बीच आनन्द मनाना। 6 और 7 में, उन्होंने प्रतिकूल वास्तविकताओं के बीच आनन्द मनाने के बारे में बात की जो वे देख सकते हैं।

अब, वह उन अद्भुत, गौरवशाली वास्तविकताओं के बीच आनन्द मनाने की बात करता है जिन्हें वे नहीं देख सकते। पद 8 और 9 में, उसे देखे बिना, आप उससे प्रेम करते हैं। हालांकि अब आप उसे नहीं देखते हैं, फिर भी आप उस पर विश्वास करते हैं और अत्यधिक और अत्यधिक आनन्द से आनन्दित होते हैं।

अपने विश्वास के परिणाम के रूप में, आप अपनी आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हैं। अब, यह एक संभावित कठिनाई की ओर इशारा करता है। आखिरकार, और वैसे, यह एक कठिनाई है जिसका अनुभव हम भी करते हैं।

यदि हम लोगों से कहते हैं, यदि हम अपने संबंध में कहते हैं कि हम यीशु मसीह के कारण बचाए गए हैं, यीशु मसीह हमारे उद्धारकर्ता हैं, तो कम से कम इस तथ्य में एक संभावित समस्या है कि वह यहां नहीं हैं, जिन्हें हमने कभी नहीं देखा है वह, और अब हम उसे नहीं देखते हैं। पाठकों के लिए यह एक ऐसी कठिनाई थी जो पीटर का सुझाव है कि उसके पास स्वयं नहीं थी। वह बाद में 5:1 में कहेगा, मैं तुम्हारे बीच के बुजुर्गों को एक साथी बुजुर्ग और मसीह के कष्टों के गवाह के रूप में प्रोत्साहित करता हूँ।

उसने हमारे प्रभु को देखा था, लेकिन ईसाइयों की इस दूसरी पीढ़ी ने नहीं देखा है, और वे अब भी उसे नहीं देखते हैं। ईसाई जीवन एक ऐसे व्यक्ति पर आधारित है जिसे उन्होंने कभी नहीं देखा है। अब, यह समस्या अक्सर नए नियम में परिलक्षित होती है, उदाहरण के लिए, जॉन के सुसमाचार में, जॉन 20, छंद 26 और उसके बाद का यह प्रसिद्ध मार्ग।

आठ दिन बाद, मान लीजिए कि पुनरुत्थान के बाद, उसके शिष्य फिर से घर में थे, और थॉमस उनके साथ था। द्वार बन्द थे, परन्तु यीशु आया और उनके बीच खड़ा होकर बोला, तुम्हें शांति मिले। तब उस ने थोमा से कहा, अपनी उंगली यहां लाकर मेरे हाथ देख, और अपना हाथ बढ़ाकर मेरी ओर कर।

अविश्वासी मत बनो, बल्कि विश्वास करो। थोमा ने उस को उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर। यीशु ने उस से कहा, क्या तू ने मुझे देखकर विश्वास किया है? धन्य हैं वे जिन्होंने नहीं देखा और फिर भी विश्वास कर लिया।

निःसंदेह, यहां हमारे 1 पतरस परिच्छेद में वे जो देखते हैं, उत्पीड़कों और उत्पीड़कों, और जो वे नहीं देखते हैं, मसीह के बीच एक विरोधाभास है। इससे संदेह और निराशा हो सकती है, लेकिन इसका समाधान भविष्य की दिशा अपनाना है। फिर, श्लोक 6 की तुलना में यहाँ आनन्द की भूमिका पर ध्यान दें। इसमें आप आनन्दित होते हैं।

आप किस बात से खुश हैं? आशा में, आशा में. और पद 8 में, उसे देखे बिना, तुम उससे प्रेम करते हो, यद्यपि अब तुम उसे नहीं देखते हो, तुम उस पर विश्वास करते हो, और अवर्णनीय और अत्यधिक आनंद से आनन्दित होते हो। अपने विश्वास के परिणाम के रूप में, आप अपनी आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हैं।

ईसाई अस्तित्व भविष्य से संबंधित है और अतीत या वर्तमान वास्तविकताओं या वर्तमान परिस्थितियों पर निर्भर नहीं है, सिवाय इसके कि ये भविष्य की गवाही देते हैं। मैं यहां अब शब्द का संदर्भ नोट करूंगा। हालाँकि अब आप उसे नहीं देखते हैं, जिसका अर्थ है कि वे देखेंगे, हालाँकि अब आप उसे नहीं देखते हैं, आप उस पर विश्वास करते हैं।

ऐसा हो सकता है कि अतीत और वर्तमान दृष्टि पर निर्भर रहने की असंभवता एक आस्तिक को भविष्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर करती है, इस प्रकार विश्वास और आशा उत्पन्न होती है, एक प्रकार का विश्वास और आशा जो प्रेम की ओर ले जाती है या उसका पोषण करती है। उसे देखे बिना ही आप उससे प्यार करते हैं। हालाँकि अब आप उसे नहीं देख रहे हैं, फिर भी आप अवर्णनीय और अत्यधिक आनंद से प्रसन्न हैं।

किस मामले में, पीटर यह सुझाव दे सकता है कि जैसे पीड़ा अच्छी खबर बन जाती है, वैसे ही यह असमर्थता, तथ्य यह है कि उन्होंने मसीह को नहीं देखा है और अब उन्हें नहीं देख रहे हैं, उन्हें एक तरह का अभ्यास करने का अवसर प्रदान कर सकता है विश्वास और एक प्रकार की आशा जो तब संभव नहीं होती यदि उन्होंने उसे देखा होता या यदि वे उसे अभी देख रहे होते। यीशु वास्तव में यूहन्ना अध्याय 20 में यही कहते हैं, है ना? क्या तुम मुझ पर विश्वास करते हो क्योंकि तुमने मुझे देखा है? धन्य हैं वे जिन्होंने नहीं देखा फिर भी विश्वास कर लिया। अब, श्लोक 10 से 12 के संबंध में बस एक शब्द।

यहां हमारे पास पिछली व्यवस्था में दूतों के मुकाबले ईसाइयों को श्रेष्ठ विशेषाधिकार और स्थिति है, ईसाई लाभ। और निश्चित रूप से, वह यहां सबसे अधिक ध्यान देते हैं, यह मात्रात्मक चयनात्मकता है, श्लोक 10 से 12 ए में भविष्यवक्ताओं पर उनके विशेषाधिकार पर अधिक ध्यान

दिया जाता है। जिन भविष्यवक्ताओं ने तुम्हारे होने वाले अनुग्रह के विषय में भविष्यवाणी की, उन्होंने इस उद्धार के विषय में खोजबीन और पूछताछ की।

उन्होंने पूछताछ की कि मसीह के कष्टों और उसके बाद की महिमा की भविष्यवाणी करते समय उनके भीतर मसीह की आत्मा ने किस व्यक्ति या समय का संकेत दिया था। यह उन पर प्रगट हुआ, फिर से परमेश्वर द्वारा दिव्य निष्क्रिय, उन पर प्रगट हुआ कि वे स्वयं की नहीं, बल्कि उन बातों में आपकी सेवा कर रहे थे, जिनकी घोषणा अब उन लोगों द्वारा की गई है, जो आपके द्वारा भेजे गए पवित्र आत्मा के माध्यम से आपको शुभ समाचार का उपदेश देते हैं। स्वर्ग। अब, वास्तव में यहाँ ध्यान देने योग्य बस कुछ ही बातें हैं।

सबसे पहले, मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि मैंने पिछली व्यवस्था में दूतों के खिलाफ स्थिति का उल्लेख किया था। आप कह सकते हैं, ठीक है, हाँ, यह स्पष्ट रूप से भविष्यवक्ताओं से संबंधित है। वे दूत थे, लेकिन आप स्वर्गदूतों को दूत क्यों कहते हैं? पीटर इसे यहाँ स्पष्ट रूप से नहीं कहता है, लेकिन मुझे लगता है कि यह तथ्य कि वह स्वर्गदूतों को पैगम्बरों से जोड़ता है, यह बताता है कि वह उस धारणा पर काम कर रहा है जो उस समय यहूदी धर्म में बहुत प्रमुख थी।

यह वास्तव में व्यवस्थाविवरण के 33वें अध्याय के एक अंश के सेप्टुआजेंट अनुवाद से लिया गया है, और वह यह है कि कानून की मध्यस्थता स्वर्गदूतों के माध्यम से की गई थी। गलातियों के अध्याय 3 में पॉल बिल्कुल यही कहता है कि कानून की मध्यस्थता स्वर्गदूतों के माध्यम से की गई थी। प्रेरितों के काम के 7वें अध्याय में स्तिफनुस यही बात कहता है।

आप कानून को प्राप्त करते हैं, या आप कानून को स्वर्गदूतों और उनके जैसे अन्य लोगों के माध्यम से मध्यस्थता के रूप में स्वीकार करते हैं, इसलिए नए नियम में भी। और इब्रानियों 2, इब्रानियों अध्याय 2 में, छंद 2 और 3 के आसपास भी नए नियम में इस व्यापक दृष्टिकोण का संकेत मिलता है कि कानून में स्वर्गदूतों द्वारा मध्यस्थता की गई थी ताकि स्वर्गदूत भी भगवान के रहस्योद्घाटन की मध्यस्थता कर सकें। वे ईश्वर के दूत थे।

अब इन सभी के संबंध में क्रियाएं, यहां सभी क्रियाएं वर्तमान काल का उपयोग करती हैं और उनकी ओर से मेहनती और लगातार पूछताछ का संकेत देती हैं। मैं यह भी नोट करूंगा कि भविष्यवाणी संदेश का सार इन ईसाइयों का अनुभव है। ध्यान दें कि पतरस कहता है कि मसीह के कष्टों और उसके बाद की महिमा की भविष्यवाणी करते समय भविष्यवक्ता वास्तव में मसीह के बारे में बात कर रहे थे।

पीटर यहां नए नियम के इस विश्वास को उठा रहे हैं कि पूरा पुराना नियम मसीह की गवाही देता है। सभी भविष्यवक्ता मसीह की गवाही देते हैं, और विशेष रूप से, मसीह के कष्टों और उसके बाद की महिमा पर केन्द्रित होते हैं। इसका बड़ा महत्व है।

मैं यहां इसमें जाने के लिए समय नहीं लूंगा, लेकिन ईसाई पुराने नियम का उपयोग कैसे करते हैं, इसके संबंध में इसका बहुत महत्व है। लेकिन वह यहां पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं और ईसाई उद्घोषणा, सुसमाचार जो आपको दो तरीकों से घोषित किया गया है, के बीच संदेश की

निरंतरता पर भी जोर देता है। उद्घोषणा के साधन या सशक्तिकरण के संदर्भ में, पवित्र आत्मा दोनों मामलों में शामिल था।

उन्होंने पूछा कि श्लोक 11 क्या है, उन्होंने पूछा कि मसीह के कष्टों और उसके बाद की महिमा की भविष्यवाणी करते समय उनके भीतर मसीह की आत्मा ने किस व्यक्ति या समय का संकेत दिया था। और तब पद 12 में वह कहेगा, वे अपनी ही नहीं, परन्तु उन बातों में तुम्हारी ही सेवा कर रहे थे, जो अब उन लोगों ने तुम्हें बताई हैं, जो पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं, वही पवित्र आत्मा जो काम करता है। ईसाई सुसमाचार का प्रचार पैगम्बरों में सक्रिय था। लेकिन न केवल, आप जानते हैं, वही सशक्तिकरण, वही साधन, वही उद्घोषणा की एजेंसी, बल्कि वही संदेश भी।

मसीह पैगम्बरों और ईसाई सुसमाचार दोनों का संदेश है जो आपके लिए घोषित किया गया है। अब, निःसंदेह, इस परिच्छेद में तीन जोर हैं। पहला यह है, पहला यह है, और यही मूल बिंदु है जिसे वह कहना चाहता है, पैगम्बरों और स्वर्गदूतों से ऊपर ईसाइयों की स्थिति।

ये परमेश्वर के उद्धार के प्रमुख मध्यस्थ थे। और यहूदी धर्म में एक दृष्टिकोण था कि पैगम्बरों को वास्तव में विशेष विशेषाधिकार प्राप्त थे। लेकिन अब पतरस ने घोषणा की है कि हम ईसाई, सबसे छोटे ईसाई को महान पैगम्बरों की तुलना में बहुत लाभ, महान विशेषाधिकार प्राप्त है।

इसका निहितार्थ बहुत स्पष्ट है. आप लाभान्वित हैं. अपने लाभ को स्वीकार करें.

इससे आनंद की प्राप्ति होनी चाहिए और आपको ईसाई सुसमाचार में उन तरीकों से जीवन जीना चाहिए जो वे ऐसा करने में सक्षम नहीं थे क्योंकि वे मुक्ति के इतिहास के संदर्भ में कहां खड़े थे। उनके पास आपके पास मौजूद मुक्ति ऐतिहासिक लाभ का अभाव था। और तुम्हें विश्वास बनाए रखने और उससे पीछे न हटने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।

यह बहुत बड़ा नुकसान होगा यदि आप किसी भी तरह से इस अनुग्रह का, जो कि आपका है, पूरा लाभ नहीं उठा पाए, जिसकी वे केवल आशा कर सकते थे, जिसके बारे में वे केवल पूछताछ कर सकते थे। और देवदूत केवल देखने के लिए तरस सकते थे। दूसरा जोर यह है कि ईसाई अस्तित्व की खातिर भविष्यवाणी की घोषणा मौजूद है।

यह ईसाइयों के लिए पुराने नियम के महत्व की ओर इशारा करता है, हिब्रू धर्मग्रंथों के मूल्य और इसके मूल्य की प्रकृति दोनों, जिसका इसके उपयोग की दिशा और जिस तरह से हम अंततः इसे पढ़ते हैं, उससे संबंधित है। मूल रूप से, इसका मतलब यह है कि जब ईसाई पुराने नियम के साथ काम करते हैं, तो पुराने नियम को पढ़ते हैं, पुराने नियम का अध्ययन करते हैं, पुराने नियम से उपदेश देते हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए कि उन्हें यथासंभव यह सुनिश्चित करने के लिए सावधान रहने की आवश्यकता है कि इसका अर्थ क्या है ये पुराने नियम के अंश अपने सन्दर्भों में। इससे कम कुछ भी करना ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के प्रकट ऐतिहासिक और अवतारात्मक चरित्र को नकारना है।

इसलिए, यह केवल बिना सोचे-समझे और बहुत ही सतही तरीके से पुराने टेस्टामेंट में पढ़ाए जाने वाले नए टेस्टामेंट को पढ़ने का मामला नहीं है, ताकि पुराने टेस्टामेंट को कभी भी अपनी शर्तों पर सुनने की अनुमति न दी जाए। वो करें। लेकिन मुद्दा यह है कि आप उस पर नहीं रुकें।

यह हमेशा आगे बढ़ने और पूछने का विषय है कि यह शिक्षा, पुराने नियम के इस अंश का यह सत्य कैसे मसीह की ओर इशारा करता है? मसीह में इसकी पूर्ति कैसे होती है? मसीह के व्यक्तित्व में, मसीह के कार्य में, मसीह के लोगों में? अब, तीसरा जोर साधनों के संदर्भ में मसीह की आत्मा द्वारा संदेश की निरंतरता, मसीह की पीड़ाओं और सार के संदर्भ में उसके बाद की महिमा पर है। और फिर, निस्संदेह, चौथे, जोर इस बात पर है कि मुक्ति, हालांकि मुख्य रूप से भविष्य है, पूर्ति के रूप में पहले से ही मौजूद है। आप पहली अवधि में मोक्ष के बारे में बात कर सकते हैं जो मुख्य रूप से भविष्य है, लेकिन एक अर्थ यह भी है कि यह वर्तमान भी है और अतीत की पूर्ति में है इसलिए इसे तैयार किया गया है ताकि हम वास्तव में अंतिम दिनों में जी सकें युगों का अंत, यद्यपि यह युगांतशास्त्रीय काल, यह युगांतशास्त्रीय अस्तित्व अभी तक समाप्त नहीं हुआ है।

तो, दूसरे शब्दों में, ईसाई पीछे और आगे दोनों तरफ देखता है। मोक्ष जैसा कि हम वर्तमान में अनुभव कर रहे हैं, यह सूचित और समृद्ध रूप से सूचित है, वास्तव में, आवश्यक रूप से अतीत से, भविष्यवक्ताओं और स्वर्गदूतों से सूचित किया गया है, वैसे, वह यहां कानून को ध्यान में रख सकता है। लेकिन यह भी, निस्संदेह, मोक्ष अनिवार्य रूप से भविष्य है, इसमें हमारा भविष्य देखना और हमारे वर्तमान मोक्ष को भविष्य द्वारा सूचित किया जाना शामिल है, और वास्तव में, मोक्ष जहां तक हम इसे अभी अनुभव करते हैं वह भविष्य का मोक्ष है जो कि अस्तित्व में है, जो कि अस्तित्व में है। प्रोलेप्टिक रूप से अनुभव किया गया।

भविष्य हमारे वर्तमान में सेंध लगा रहा है। खैर, यह कम से कम वह आधार है जो पीटर ईसाई जीवन के दृष्टिकोण के लिए देता है जिसे वह आगे बढ़ेगा और अपनी पुस्तक के बाकी हिस्सों में उपदेश के माध्यम से प्रस्तुत करेगा।

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 30, 1 पतरस 1:3-12 है।